वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष :3 अंक : 238 | मंगलवार 26 दिसम्बर 2023 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

सांता क्लॉज ने बच्चों को बांटे उपहार, मनाया क्रिसमस का पर्व

जयपुर. कासं। देशभर में क्रिसमस का पर्व धूमधाम से मनाया गया। मालवीय नगर स्थित एकादशी फाउंडेशन में क्रिसमस सेलिब्रेशन का आयोजन किया गया। फाउंडेशन द्वारा संचालित स्कूल के बच्चों के साथ क्रिसमस सेलिब्रेशन कर खुशियां बांटी गई। कार्यक्रम में नन्हे-मुन्ने बच्चे सांता क्लॉज की वेशभूषा में घरों से सजकर आए। बच्चों ने सांता बनकर बच्चों को चॉकलेट व टॉफियां वितरित की। बच्चों ने क्रिसमस ट्री सजाया और सांता के लिए विश लिखकर अपने हाथों से कार्ड बनाए। साथ ही बच्चों के साथ सांता क्लॉज ने क्रिसमस गीत व जिंगल बैल गीत पर गाकर डांस कर क्रिसमस सेलिब्रेट किया। इस मौके पर विद्यालय की अध्यापिका शीला और धनवंतरी ने भी ईसा मसीह के जन्म की कहानी पर प्रकाश डाला। एकादशी फाउंडेशन की फाउंडर विभूति सिंह ने विद्यार्थियों को क्रिसमस की बधाई देते हुए कहा की हमें सभी त्योहार मिल जुलकर मनाने चाहिए। इससे सभी लोगों में भाईचारे का भाव बना हुआ रहता है।

सीएम भजनलाल बोले-मरीज के घर पर पहुंचेगी जांच मशीनें

अस्पताल जाने की जरूरत नहीं होगी, सरकार इस दिशा में काम कर रही

जयपुर. कासं

सीएम भजनलाल शर्मा ने कहा कि हम ऐसी व्यवस्था करना चाहते हैं कि बीमार व्यक्ति को जांच के लिए अस्पताल नहीं आना पड़े। उसके घर तक जांच के लिए मेडिकल वैन पहुंचे जिसमें सभी तरह की जांच की सुविधा हो। उन्होंने कहा कि हम इसे एग्जामिन करवा रहे हैं। कैलेंडर बनाकर हर व्यक्ति की जांच उसके घर पर ही कराने की दिशा में काम करेंगे। सीएम आज सुशासन दिवस के कार्यक्रम में जयपुर के पास बगरू के अजयराजपुरा में आमजन को संबोधित कर रहे थे। सीएम भजनलाल ने यहां स्वच्छता सप्ताह का शुभारंभ किया। वहीं, यहां विकसित भारत संकल्प यात्रा के तहत चल रहे कैंप का दौरा किया। सीएम ने कहा कि विकसित भारत यात्रा के जरिए हमें अंतिम व्यक्ति तक पहुंचना है। केंद्र सरकार की 39 योजनाएं हैं। कोई व्यक्ति छूट न जाए, उसकी चिंता करनी है।

जयपुर डायवर्ट हुईं दिल्ली की 6 फ्लाइट, उदयपुर जा रही एक फ्लाइट जयपुर लौटी

देर रात पटना से दिल्ली जा रही एयर एंबुलेंस भी डायवर्ट, सड़क मार्ग से भेजा

जयपुर. कासं

सोमवार को जयपुर के नजदीकी दो शहरों में मौसम खराब होने के चलते हवाई यात्रियों को परेशानी का सामना करना पड़ा। दिल्ली जा रही 6 फ्लाइट्स लैंड नहीं हो पाने की वजह से जयपुर डायवर्ट हुईं। वहीं जयपुर से उदयपुर के लिए रवाना हुई एक फ्लाइट भी उदयपुर में खराब मौसम के चलते वापस लौट आई। दरअसल, दिल्ली का इंदिरा गांधी इंटरनेशनल एयरपोर्ट यूं तो अत्याधुनिक उपकरणों और सुविधाओं से लैस है, लेकिन कई बार विमानों में इनके समकक्ष उपकरण नहीं होने के चलते फ्लाइट्स का संचालन गड़बड़ा जाता है। सोमवार को कुछ विमानों में इंस्ट्रूमेंट लैंडिंग सिस्टम पर्याप्त नहीं होने की वजह से फ्लाइट्स को दिल्ली एयरपोर्ट पर लैंड नहीं कराया जा सका। दिल्ली एयरपोर्ट पर रात से ही घना कोहरा था। जयपुर एयरपोर्ट पर डायवर्ट फ्लाइट्स के आने की शुरूआत सुबह पौने 8 बजे से हुई और सुबह साढ़े 9 बजे तक करीब 6 फ्लाइट्स डायवर्ट होकर जयपुर आई। डायवर्ट हुई फ्लाइट्स में 3 इंटरनेशनल और 3 घरेलू फ्लाइट्स शमिल रहीं।

जयपुर से गए थे उदयपुर, वापस लौट आए जयपुर, सड़क मार्ग से गए यात्री

दिल्ली से डायवर्ट हुई सभी फ्लाइट्स सुबह 10:30 बजे से वापस दिल्ली जाना शुरू हो गईं। इसके बाद दोपहर 12 बजे तक 5 फ्लाइट्स वापस लौट गईं। त्रिवेंद्रम से दिल्ली की फ्लाइट के पायलट के ड्यूटी ऑवर्स पूरे हो जाने के चलते उसने आगे उड़ान भरने से इनकार कर दिया। दिल्ली के अलावा उदयपुर एयरपोर्ट पर भी कोहरे के चलते फ्लाइट्स के आवागमन में परेशानी हुई। उदयपुर एयरपोर्ट पर भी सुबह

10 बजे तक किसी फ्लाइट की लैंडिंग नहीं हो सकी। इंडिगो की फ्लाइट 6ई-7465 सुबह 6:45 बजे जयपुर से उदयपुर के लिए रवाना हुई थी। इसके बाद 7:50 बजे फ्लाइट को उदयपुर एयरपोर्ट उतरना था। लेकिन उदयपुर में खराब मौसम के चलते फ्लाइट आधे घंटे होल्ड पर रही। क्लीयरेंस नहीं मिलने पर डायवर्ट होकर फ्लाइट वापस जयपुर आई। सुबह 8:50 बजे फ्लाइट वापस जयपुर एयरपोर्ट पर सुरक्षित उतरी। बाद में फ्लाइट को रद्द कर दिया गया। हालांकि एयरलाइंस ने सभी यात्रियों को सड़क मार्ग से उदयपुर भेजा।

दासता के नागपाश में स्वतः जकड़ते हम...

इंजिनियर अरुण कुमार जैन

विश्व के ईसाई देशों में क्रिसमस महोत्सव धूमधाम से मनाया जा रहा है, वहाँ इस महोत्सव को मनाया जाना स्वाभाविक है क्योंकि उनके एक ही आराध्य हैं व अपने भगवान का जन्मदिन मनाना हर अनुयायी का कर्तव्य है पर हमारे उन नगरों, कालोनीयों, उपनगरों में जहाँ ईसाई 1% भी नहीं हैं, यह पर्व उत्साह, आस्था, समर्पण से मनाया जाना भ्रम, अंधानुकरण व दासता की मनोवृति प्रदर्शित करता है. इस आयोजन में सेंटाक्लाज जो एक काल्पनिक पात्र है आपको मोजे में उपहार देता है. ईसाई समाज सिर्फ कुछ पर्व ही मनाता है, उनका क्रिसमस के उत्साह में डूब जाना स्वाभाविक है. हम भारतीयों के सैकड़ो भगवान हैं, हजारों महापुरुष हैं, संत हैं, जन नायक, क्रन्तिकारी हैं जिन्होंने अपने प्राण देकर हमें स्वतंत्रता दी, इन सबके हमारे ऊपर अनंत उपकार हैं, जिनका ऋण चुकाना असंभव है. उन सभी की जयंती, बलिदान दिवस, मोक्ष दिवस, विजय दिवस न मनाकर हम क्रिसमस के उत्साह में डूबे हैं? अपने पैसे, समय खर्चकर हम अपने बच्चों को सेंटा जैसी ड्रेस पहिनाते हैं, जो फिर सालभर में एक दिन भी प्रयोग में नहीं की जाएगी, क्रिसमस

ट्री, सितारे आदि खरीदकर, सेंटा के गुण गाकर अपनी ऊर्जा, अपना पैसा व्यय कर रहे हैं व अपने बच्चों के मन में भी अंदर तक हीनता, गुलामी, दासता को स्थापित कर रहे हैं. इन दिनों गुरु गोविन्द सिँह जी के चारों बेटों ने देश के लिए बलिदान दिया था, आज पंडित मदन

मोहन मालवीय जी, अटल बिहारी बाजपेई जी का जन्मदिन है, हमें इनके लिए आयोजन करना चाहिए जिसमे बच्चों को प्रेरणा,श्रद्धा ज्ञान व गौरव की अनुभूति हो. हमारे संतो ने आव्हान किया है कि तुलसी पूजा करें, संक्रांति निकट है जो भारतीय संस्कृति में विशिष्ट स्थान रखती है, उसकी तैयारी करें, जो हर तरह से प्रेरक, लाभदायक व संस्कार दायक है. हमारे श्रद्धेय राम, कृष्ण, तीर्थंकर ऋषभदेव जी से महावीर स्वामी तक, देशभक्त स्वतंत्रता सेनानियों, संतो, भगवतों, आचार्यो की विशाल श्रँखला हमारी गौरव थाती है, हमें उनके गुण गाने चाहिए जिससे मन में देश भक्ति, श्रद्धा, गौरव, वीरता व स्वाभिमान आये. हमारी पावन नदियाँ, पर्वत व तीर्थ स्थल हैं जिनपर युगों से हमारी आस्था है, हमें वहाँ जाकर अपने गौरव को दृढ करना चाहिए. हम सेंटा के ग्रीटिंग कार्ड, उसकी ड्रेस अपना, उसके गुणगान कर 31दिसंबर की रात्रि होटलों में व्यंजन, शराब, मांसाहार लेकर, हुल्लड, शोर, शराबा कर अपने व्यक्तित्व को, समाज को, देश को, संस्कृति को, परिवार को सिर्फ और सिर्फ हानि दे रहे हैं. मेरा अनुरोध है उन सभी से जो इन सब आयोजनों में लिप्त हैं, कि स्वयं, अपने स्वजनों व बच्चों को अपनी संस्कृति, धर्म, समाज, देश पर गौरवान्वित होने के अवसर प्रदान करें.

अपने प्रभु, गुरु, संस्कृति पर, श्रद्धा व सम्मान रखें,
गौरव, शक्ति, आस्था का वर, अपनी नई पीढ़ी को दें.

#अमृता हॉस्पिटल फरीदाबाद, हरियाणा, मो 7999469175

देवर्षि माधुरी कलानाथ शास्त्री को समर्पित ''मातृका स्तुति''

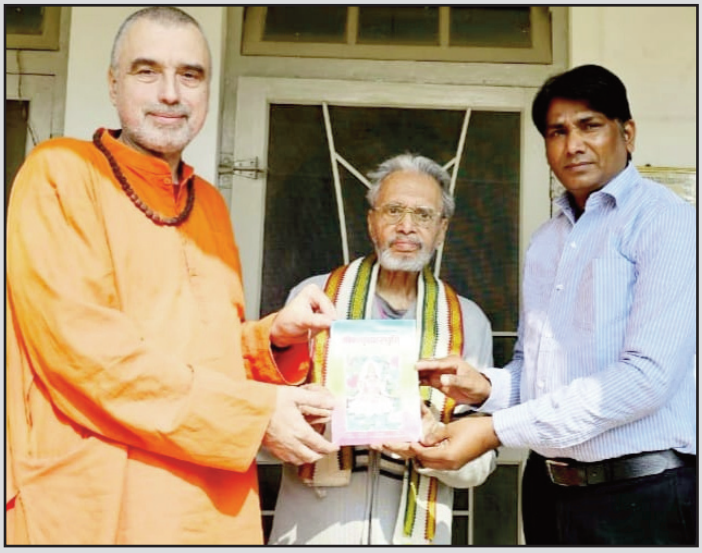

जयपुर. शाबाश इंडिया। जयपुर के सुप्रसिद्ध ज्योतिषी व तांत्रिक पं. सरयू प्रसाद द्विवेदी लिखित त्रिपुरा रहस्य की हारितायन संहिता से ''मातृका स्तुति'' का सोमवार को विमोचन हुआ ।पं. सरयू प्रसाद द्विवेदी की इस अलौकिक कृति का अनुवाद संस्कृत विद्वान डॉ. प्रवीण पंड्या ने तथा संपादन डॉ. सुरेंद्र कुमार शर्मा ने किया है। महामंडलेश्वर स्वामी ज्ञानेश्वर पुरी महाराज और डॉ.सुरेंद्र कुमार शर्मा ने आज यह मातृका स्तुति संस्कृत जगत के अद्वितीय विद्वान देवर्षि कलानाथ शास्त्री एवं माधुरी शास्त्री को समर्पित की। इस अवसर पर शास्त्री ने बताया की राजस्थान के लिए गौरव की बात है की ऐसी दुर्लभ कृतियों को प्रकाशन विश्व गुरु दीप आश्रम शोध संस्थान जयपुर ने प्रबंध संपादन एमएल गर्ग का यह कार्य अत्यंत प्रशंसनीय है।

सौंदर्य प्रतियोगिता "ब्यूटी ऑफ राजस्थान" का ग्रैंड फिनाले संपन्न

विशाखा राठौड़ रहीं विनर, प्रिया चौहान और आशी शर्मा रहे फर्स्ट और सेकंड रनरअप

जयपुर. शाबाश इंडिया

मालीराम एण्ड सन्स एंटरटेनमेंट की ओर से रविवार को सीकर रोड स्थित होटल रमाडा में सौंदर्य प्रतियोगिता 'ब्यूटी ऑफ राजस्थान' का ग्रैंड फिनाले सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि संदीप सिंह चौहान आईजी थे वहीं बॉलीवुड के प्रसिद्ध कलाकार जीतू वर्मा (जोजो) विशिष्ट अतिथि थे। मालीराम एण्ड सन्स एंटरटेनमेंट के फाउंडर एंड डायरेक्टर गौरव योगी ने बताया कि प्रतियोगिता के दौरान ऑडिशन में निर्णायकों ने प्रतियोगिता के 20 प्रतिभागियों में से विनर का चयन किया। प्रतियोगिता में विनर विशाखा राठौड को घोषित किया गया वहीं फर्स्ट रनरअप प्रिया चौहान को और सैकण्ड रनरअप आशी शर्मा घोषित हुये। 5 युवतियों को बेस्ट स्माइल, बेस्ट फोटोजेनिक, बेस्ट कॉन्फिडेंस, बेस्ट टेलेंटेड और बेस्ट पर्सलिटी टाइटल अवार्ड भी दिये गए। सतरंगी रोशनी और डीजे की तेज ध्वनि के बीच प्रतिभागियों ने रैंप वॉक किया। साथ ही डांस की शानदार प्रस्तुतियां हुईं। हॉल में उपस्थित दर्शकों ने तालियां बजा प्रतियोगियों का उत्साहवर्धन किया। कार्यक्रम के समापन पर भव्य आतिशबाजी की गई। प्रतियोगिता के विनर सहित फर्स्ट और सेकंड रनरअप को फोटो शूट के साथ , दो म्यूजिक एल्बम भी दी जायेंगे। कार्यक्रम के ऑर्गनाइजर कपिल शर्मा, रविकान्त शर्मा और प्रेरणा मंडलोई ने बताया कि मुख्य अतिथि के चाँदमाल कुमावत, भूमिजा स्कूल के संस्थापक मनोज अमन, विद्या भारती स्कूल के संस्थापक के ऐन भाटी, डॉ हंसराज शर्मा, एसएसएबीसी ग्रुप के फाउंडर मदन यादव, संदीप अग्रवाल, हंसराज शर्मा और नेमीचंद सेनी उपस्थित रहे। योगी ने बताया कि जूरी मेम्बर में मधु भाटी, राशिका राठौर, सुगंधा शर्मा रहे। ग्रूमिंग टीचर रोनिका सिंह रहे और नरेश डांस कम्पनी ने डांस का परफॉरमैन्स दिया कार्यक्रम में डिजाइनर संजय शर्मा ने अपने कलेक्शन का शोकैश किया। शब्बीर और डॉ. अंशिका चौधरी ने कार्यक्रम में एंकरिंग की।

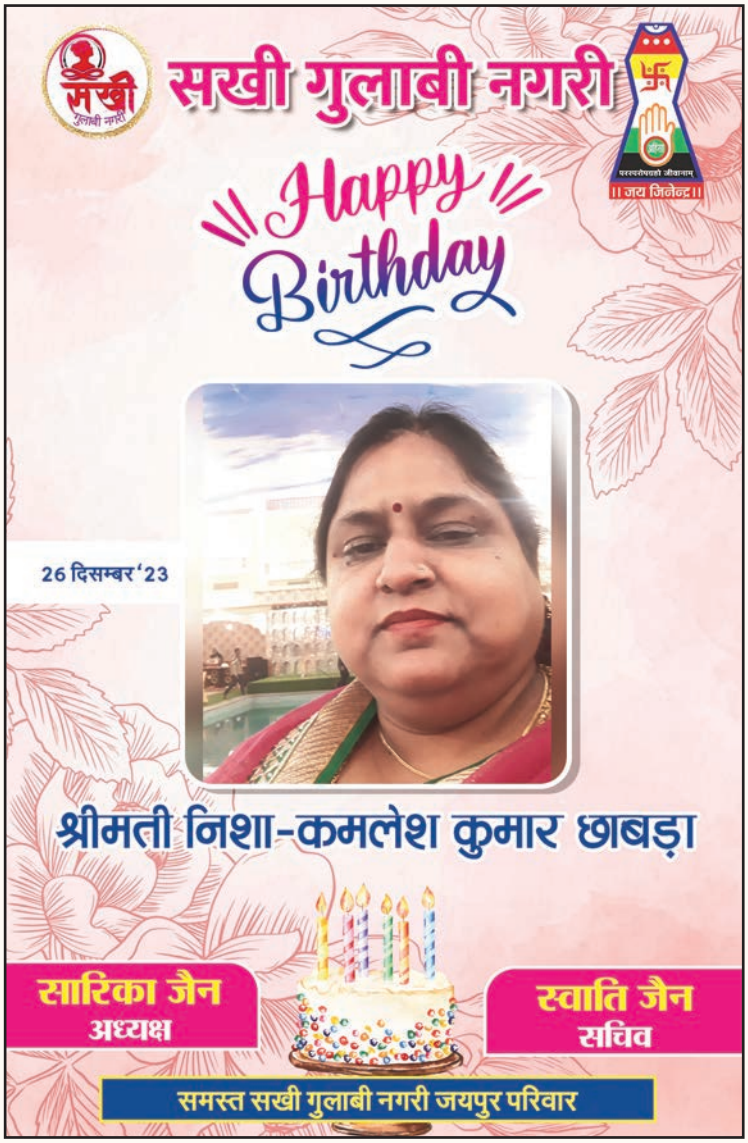

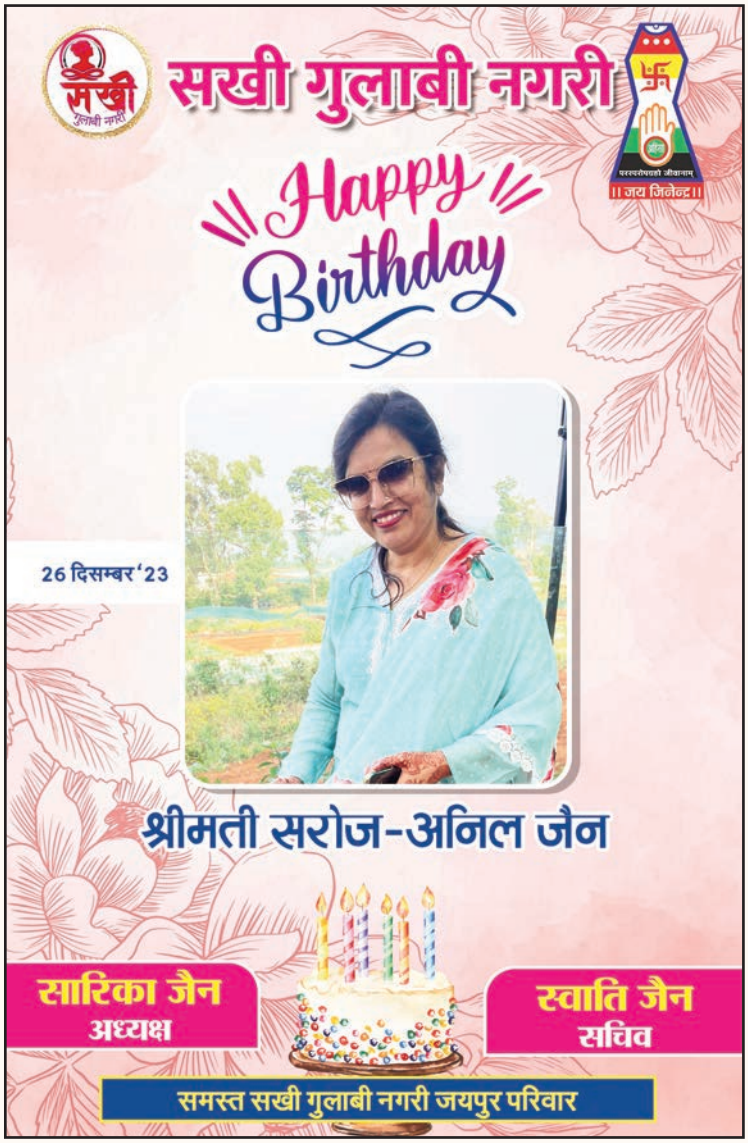

वेद ज्ञान

इंसान के भाग्य में क्या लिखा है उसे जानना इंसान के बस में है

अपने भाग्य या भविष्य को जानने के प्रति इंसान का जिज्ञासु होना स्वाभाविक है और इसीलिए अतीत काल से इस दिशा में बहुत सारी विधाएं प्रचलन में रही हैं। मसलन ज्योतिष शास्त्र, हस्तरेखा विज्ञान, फेस रीडिंग, न्यूमेरोलोजी, टैरो कार्ड इत्यादि। इनसे अलग एक और सोच है जो कहती है कि इंसान के भाग्य में क्या लिखा है यह जानना बहुत कुछ उस इंसान के बस में है और यह संभव है कर्म करने से अर्थात कर्म विज्ञान द्वारा। इसके अनुसार इंसान को अपना भाग्य जानने के लिए इच्छित दिशा में पूरे परिश्रम और ईमानदारी से प्रयास करने होंगे। और यदि उस दिशा में सफलता मिल जाती है तो समझ लेना चाहिए कि ऐसा उसके भाग्य में लिखा था जिसे उसने सच्ची श्रद्धा और अपनी मेहनत से जाना, न कि किसी भविष्यवेत्ता की सहायता से। मतलब इंसान को अपने प्रारब्ध या भाग्य को स्वयं कर्म करके जानना होगा। यहां आकर गीता के कर्मयोग के सिद्धांत का भाग्य के सिद्धांत से समन्वय देखने को मिलता है। इस दृष्टिकोण के मुताबिक इंसान को अपना भाग्य जानने के लिए किसी के पास जाने की जरूरत नहीं है, बल्कि स्वयं कर्म करके जानना उसके लिए ज्यादा सुगम और आसान है। हां, उसे कोई भी प्रयास करने से पहले अपनी योग्यता और क्षमता को ध्यान में जरूर रखना चाहिए। दूसरी तरफ कुछ ऐसे भी लोग हैं जो मानते हैं कि उनके भाग्य में जो कुछ लिखा होगा तो उसे देने के लिए कर्म भी ईश्वर ही करवा लेंगे। ऐसे महानुभाव खुद कोई जिम्मेदारी न लेकर सब कुछ ईश्वर पर छोड़े रखना चाहते हैं। उदाहरण के तौर पर ये कहते हैं कि किसी के भाग्य में आइएएस बनना लिखा है तो ईश्वर ही आवेदन पत्र भरवाएगा, परीक्षा की तैयारी करवाएगा, सफल कराएगा और नियुक्ति पत्र भी घर भिजवाएगा। मेरा मानना है कि यदि इंसान के भाग्य में आइएएस बनना है तो उसे सच्ची निष्ठा से मेहनत करने पर सफलता मिल जाएगी और यदि उसके भाग्य में आइएएस बनना नहीं है तो भी यह जानने के लिए उसे उतनी ही सच्ची निष्ठा से मेहनत तो करनी ही पड़ेगी और तभी जाकर उसे अपने भाग्य में लिखे का पता चल सकेगा।

संपादकीय

उत्तर-दक्षिण को बांटने की बेहद घातक प्रवृत्ति

हाल के विधानसभा चुनाव परिणामों के बाद कुछ दलों द्वारा उत्तर बनाम दक्षिण के बीच के कथित भेद को बढ़ावा एवं तूल देने का प्रयास किया गया। उत्तर-दक्षिण को बांटने की यह प्रवृत्ति नई नहीं है। निहित राजनीतिक स्वार्थों की पूर्ति हेतु तमाम राजनीतिक दलों द्वारा समय-समय पर इस विभाजनकारी विषबेल को सींचने की कुचेष्टा की जाती रही है। इसे आर्य बनाम द्रविड़, मूल बनाम बाहरी, काली चमड़ी बनाम गोरी चमड़ी तथा हिंदी बनाम गैर-हिंदी विमर्श का ही विस्तार माना जा सकता है। मतगणना वाले दिन जैसे ही यह साफ हुआ कि कांग्रेस मध्य प्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ हार रही और तेलंगाना में जीत रही, वैसे ही कांग्रेस नेता प्रवीण चक्रवर्ती ने एक्स पर पोस्ट किया, उत्तर-दक्षिण सीमा रेखा मोटी और स्पष्ट होती जा रही है। बाद में उन्होंने यह पोस्ट हटा दी। इसी दिन कार्ति चिदंबरम ने सिर्फ दो शब्द द साउथ पोस्ट किए। आशय यह जताना था कि दक्षिण के मतदाता उत्तर की तुलना में अधिक

सचेत, प्रगतिशील एवं परिपक्व हैं। हद तो तब हो गई, जब डीएमके सांसद डीएनवी सेंथिल कुमार ने संसद में कहा कि इस देश के लोगों को सोचना चाहिए कि भाजपा की ताकत बस इतनी है कि वह मुख्य तौर पर गौमूत्र वाले राज्यों में ही जीत सकती है। उन्होंने आगे कहा, भाजपा दक्षिण भारत में नहीं आ सकती, क्योंकि तमिलनाडु, केरल, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और कर्नाटक में हम बहुत मजबूत हैं। तेलंगाना के नवनियुक्त मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी द्वारा अपने डीएनए को बिहारी डीएनए से बेहतर बताने वाला बयान भी उत्तर-दक्षिण के बीच विभाजन पैदा करने की मंशा को ही दर्शाता है। यह विडंबना ही है कि स्वतंत्रता आंदोलन की विरासत पर सर्वाधिक अधिकार जताने तथा संपूर्ण देश में जानी-पहचानी जाने वाली कांग्रेस का स्वर आज क्षेत्रीय दलों-सा होता जा रहा है। यह देखकर सचमुच निराशा होती है कि जो कांग्रेस कभी जोड़ने की बात करती थी और एकता एवं अखंडता का दम भरती थी, उसे आज कभी मजहबी तुष्टीकरण तो कभी जातीय एवं क्षेत्रीय अस्मिताओं के उभार में अपना भविष्य दिखाई देता है। कांग्रेस के अलावा अन्य क्षेत्रीय दलों को यह याद रखना होगा कि इस देश की मूल प्रकृति और संस्कृति जुड़ने-जोड़ने की है। यहां ऊपरी तल पर दिखाई देने वाले भेदभावों के भीतर सांस्कृतिक एकता की अंतधार्रा सदा प्रवाहित रहती है। कदाचित जुड़ने-जोड़ने की इसी भावना के कारण दक्षिण में पैदा हुए आदिगुरु शंकराचार्य को संपूर्ण देश ने सिर-माथे बिठाया। सांस्कृतिक तल पर देश को जोड़ने के उनके सद्प्रयासों को व्यापक स्वीकृति एवं अभूतपूर्व सफलता मिली। कथित तौर पर प्रचारित उत्तर-दक्षिण के भेद में यदि आंशिक सत्यता भी होती तो दक्षिण के संतों-दार्शनिकों का उत्तर में समान रूप से लोकप्रिय और स्वीकृत हो पाना संभव नहीं होता। क्या यह सत्य नहीं कि कण्व, अगस्त्य, मध्वाचार्य, रामानुजाचार्य, वल्लभाचार्य, शंकराचार्य आदि ऋषि वैदिक संस्कृति के सर्वमान्य एवं सर्वकालिक आचार्यों, उन्नायकों एवं दार्शनिकों में सर्वप्रमुख थे? **-राकेश जैन गोदिका**

परिदृश्य

सत्र का हासिल

सत्रहवीं लोकसभा, बल्कि संसद का शीतकालीन सत्र जिस तरह से संपन्न हुआ, वह सत्ता पक्ष और विपक्ष, किसी के लिए बहुत अच्छा नहीं कहा जा सकता। वैसे तो हरेक सत्र से देश को एक सकारात्मक दिशा मिलने की अपेक्षा रहती है, मगर इस सत्र से खास उम्मीद थी, क्योंकि यह न सिर्फ नए संसद भवन का पहला पूर्णकालिक सत्र था, बल्कि यह लोकसभा अपने आखिरी पड़ाव पर है। इसका अगला सत्र बजट का होगा और उसके बाद तमाम सांसद आम चुनाव में चले जाएंगे। मगर दुर्योग से इसके हिस्से आजाद भारत के संसदीय इतिहास में सर्वाधिक सांसदों के निलंबन का नकारात्मक रिकॉर्ड तो दर्ज हुआ ही, यह संसद की सुरक्षा में सेंध की गंभीर चिंता भी छोड़ गया। निस्संदेह, सरकार इस सत्र में कई ऐतिहासिक विधेयकों को पारित कराने में सफल रही, खासकर आईपीसी, सीआरपीसी व साक्ष्य अधिनियम की जगह भारतीय न्याय संहिता को पारित किए जाने के लिए इसे भावी पीढ़ियां याद करेंगी। मगर इनके साथ यह तथ्य भी नत्थी होगा कि जब यह विधेयक दोनों सदनों से पारित हो रहा था, तब विपक्षी बेंचें लगभग खाली थीं। यह एक सुखद तस्वीर नहीं हो सकती। संसद में गतिरोध या सत्ता पक्ष व विपक्ष में तनातनी कोई नई बात नहीं है, बल्कि यह जीवंत लोकतंत्र का एक लाजिम पहलू है, मगर इसकी भी एक सीमा है और उसका ख्याल दोनों पक्षों को रखना पड़ता है। निस्संदेह, सदनों के संचालन में महती जिम्मेदारी सत्ता पक्ष की होती है और प्राय संसदीय कार्य मंत्री की काबिलियत ही बेहतर ''फ्लोर मैनेजमेंट'' के आधार पर आंकी जाती है। मगर विडंबना यह है कि हाल के वर्षों में केंद्रीय विधायिका की बात हो या फिर राज्य विधायिकाओं की, संसदीय गतिरोधों के दौरान अक्सर विभागीय मंत्रियों की सक्रियता उभरकर सामने नहीं आती। संसदीय कार्य मंत्रियों को चूंकि सभी दलों के शीर्ष नेतृत्व के साथ तालमेल बिठाना पड़ता है, इसलिए वे अक्सर प्रतिपक्ष पर कटु राजनीतिक टिप्पणी करने से बचते हैं, मगर मौजूदा समय में ऐसी स्वस्थ परंपराएं अपना वजूद खो रही हैं, जिसका खामियाजा हमारे संसदीय लोकतंत्र को भुगतना पड़ सकता है। विपक्षी सांसदों ने दोनों सदनों से अपने निलंबन के विरोध में शुक्रवार को जंतर-मंतर पर धरना दिया और केंद्र सरकार को घेरने की कोशिश की। मगर सवाल यह है कि इस सत्र को ऐतिहासिक बनाने के लिए क्या उन्होंने अपने श्रेष्ठ संसदीय आचरण का प्रदर्शन किया? विपक्ष की यह संसदीय जिम्मेदारी थी कि विभिन्न विधेयकों पर अपने विचारों से वह एक मुकम्मल कानून बनाने में संसद की मदद करता, मगर उसने मंत्री विशेष के बयान पर अड़कर रणनीतिक चूक की और सरकार के लिए रास्ता सुगम ही बनाया। फिर संसद के भीतर उसकी ओर से लगातार आसन को लक्षित किया जाता रहा और निलंबन के बाद संसद परिसर में जिस तरह से सभापति का निरादर किया गया, उसमें वह सत्ता पक्ष से किसी सौहार्द की अपेक्षा भी कैसे कर सकता था? इस पूरे सत्र के दौरान दोनों पक्षों से चूक हुई है और दोनों ने एक सुनहरा मौका गंवा दिया है। सत्ता पक्ष और विपक्ष आगामी आम चुनाव के मद्देनजर अपनी-अपनी पृष्ठभूमि तैयार करने में भूल गए कि दोनों को एक-दूसरे की आगे भी जरूरत पडेगी। उनको नहीं भूलना चाहिए कि उनके आचरण पर भारतीयों की ही नहीं, बल्कि तमाम मुल्कों में लोकतंत्र की चाह रखने वाले लोगों की भी पैनी नजर रहती है।

देश की अखंडता के लिए साहिबजादों की लासानी शहादत

''देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने छोटे साहिबजादों को दीवारों में जिंदा चिनवाए जाने पर उनकी शहादत को नमन करते हुवे 26दिसंबर को हर साल वीर बाल दिवस मनाए जाने की घोषणा की। यह लेख इसी घटना को समर्पित है।''

1) गुरु गोबिंद सिंह का पूरा परिवार जो राष्ट्र के लिए कुर्बान हो गया।

2) गुरु गोबिंद सिंह जी अपने परिवार और सिख योद्धाओं के साथ आनंदपुर का किला छोड़ते हुए।

3) चमकौर के युद्ध मैदान में साहिबजादा आपने जौहर दिखाते हुवे

शाबाश इंडिया

सिख धर्म के गौरवमयी बलिदानी इतिहास को पन्नों में समेटने का सामर्थ्य किसी में नहीं है, चाहे वो इस उपक्रम में कितने भी पृष्ठ क्यों न लिख डाले...? एक अदना सा प्रयास है सिख इतिहास के एक छोटे से हिस्से को आपके सम्मुख जीवांत करने का। सिख धर्म के 10वें गुरु, श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने अपने परिवार और 500 सिख योद्धाओं के साथ आनंदपुर का किला मुगल सेना से हुवे समझौते के तहत छोड़ दिया। 20 दिसंबर, 1704 की पूस की रात का तीसरा पहर, उफान से भरी सरसा नदी को पार करता गुरु साहिब का कारवां चमकौर की ओर बढ़ चला था। पीछे से वादा खिलाफी करते हुवे मुगल सैनिकों ने हमला कर दिया और इस नदी में हुवे घमासान युद्ध में पूरा परिवार बिखर गया। गुरु माता गुजरी जी और दो छोटे साहिबजादे बाबा जोरावर सिंह और फतेह सिंह अपने पिता से बिछुड़ गए। गुरु गोबिंद सिंह जी के साथ दो बड़े पुत्र और शेष रहे सिख योद्धा लड़ाई करते नदी पार कर गए। और सामने से आते 10लाख मुगल और पहाड़ी राजाओं के सैनिक। गुरु गोबिंद सिंह जी, दो बड़े साहिबजादे और सिख योद्धाओं ने एक श्रद्धालु चौधरी बुधीचंद की कच्ची गढ़ी में ऊंची मचान पर मोर्चा संभाल लिया। 5/5के जत्थे में सिख योद्धा जाते हजारों के साथ लड़ते और शाहिद हो जाते। 18वर्षीय बड़े साहिबजादा बाबा अजीत सिंह पिता के पास आकर बोले- ''आज्ञा दीजिए युद्ध में जौहर दिखाने का अवसर आ गया है।'' पिता द्वारा हाथ में तलवार देना और पगड़ी पर कलगी सजाना ही दिल से आशीर्वाद देना था, जैसे दूल्हे को सजा रहे हों। घोड़े पर सवार होकर झपकते ही 5 सिख योद्धाओं के साथ तलवार लहराते युद्ध मैदान पहुंच गए। कितने ही मुगलों के सिर धड़ से अलग कर दिए, जहां दिखा सिख सैनिक दुश्मनो से घिरा है बिना देरी किए दुश्मनों पर टूट पड़े। साहिबजादा अजीत सिंह की शहादत देने की इच्छा ने उनमें मौत का भय ही समाप्त कर दिया था। बिजली की गति से लहराती तलवार की हद में आते ही दुश्मन सैनिकों के हवा में उड़ते सिर गुरु गोबिंद सिंह जी ऊंची मचान से देख रहे थे। उन्हे मालूम था किसी भी पल उनकी आंखों के सामने बड़े बेटे की शहादत होने वाली है। दुश्मनों के जो तीर और तलवार साहिबजादा की छाती नहीं भेद सके, उनकी पीठ पर चलने शुरू हो गए। ''बोले सो निहाल सत श्री अकाल'' का उद्घोष करते वीर गति को प्राप्त हो गए-

सूरा सो पहचानीए जु लरै दीन के हेत।
पुरजा पुरजा कट मरै कबहू न छाडै खेत।

गुरु पिता की आंखों से शहादत का यह दृश्य अभी औझल ही नहीं हुआ था कि 14 साल के पुत्र साहिबजादा जुझार सिंह सामने खड़े होकर शहीद होने की फरियाद करने लगे। कहने लगे, बड़े भैया ने मुझे तलवार चलाने और बचाव करने की बहुत सी कलाएं सिखाई थी। उन सब की परीक्षा आपके सम्मुख देने का समय आ गया है। गुरु पिता मासूम बेटे की छाती को टटोलते बोले, देखूं कितने तीर सह सकती है? बेटा बोला, मौत कैसी होगी पता नही? पर बड़े भैया की सीख को कलंकित नही होने दूंगा। पिता ने छोटे बेटे को भी दूल्हे की तरह सजा कर विदा किया। साहिबजादा जुझार सिंह तलवार लहराते युद्ध मैदान पर पहुंच गए। रास्ते में सिख सैनिकों और बड़े भैया की देह को सिर झुका कर नमन किया। गुरु पिता के सामने आज परीक्षा में पास होने का अंतिम दिन था। बाबा जुझार सिंह ने अपने नाम के अनुरूप अपनी तेग का कोई प्रहार बिना सिर काटे व्यर्थ नहीं जाने दिया। इतने चौकन्ने कि पीछे से आते दुश्मनों को भी भांप लेते और पलट कर तलवार से उसका सिर उतार देते। आगे और पीछे से दुश्मन सैनिकों से घिर गए और तलवारों के इक्कठे प्रहार से बच न सके। गुरुओं के इतिहास से सीखा था कि धर्म की रक्षा के लिए सिर देने में भी संकोच नहीं करना। और साहिबजादों की शहादत ने चमकौर युद्ध को लासानी बना दिया।

वापस पीछे चलते हैं जहां सरसा नदी पार करते समय दोनों छोटे साहिबजादे, दादी गुजरी जी के साथ गुरु गोबिंद सिंह जी के कारवां से बिछुड गए थे! नदी पार करने के उपरांत वीरान जंगल में उनके घर में काम करने वाला रसोइया गंगू मिल गया। उन्हे मरिंडा के पास अपने गांव सहेड़ी ले गया। सरहंद के शासक वजीर खान ने उनकी सूचना देने पर बड़े इनाम का एलान कर रखा था। इनाम के लालच में आकर गंगू रसोइए ने दूसरे दिन सुबह उन्हे मुगल शासक के हवाले कर दिया। उन्हे गिरफ्तार कर सरहिंद के ठंडे बुर्ज में बंद कर दिया। दादी द्वारा गुरुओं के बलिदान के प्रसंग सुन कर साहिबजादे मानसिक रूप से बड़े दृढ़ हो चुके थे। दो दिन बाद साहिबजादा जोरावर सिंह और उनसे छोटे साहिबजादा फतेह सिंह को नवाब की कचेहरी में पेश किया गया। कोई जिरह नही, सर्फ हुकम सुनाया गया - इस्लाम कबूल करो और ठाठ-बाठ की जिंदगी व्यतीत करो अन्यथा मौत की सजा स्वीकार करो। वो गुरु गोबिंद सिंह के लाल थे। दादी ने जन्म घुट्टी में ही शहादत का जाम पिलाया था। साहिबजादे बोले -

हमरे बंस रीत इह आई।
सीस देत पर धरम ना जाई।

बात बनती न देख दूसरे दिन पेश होने का फरमान सुनाया। खून जमा देने वाली ठंडे बुर्ज की रात में दादी ने दोनों बच्चों को छाती से लिपटाए इस कदर हौसला बढाती रही कि मासूम बच्चे सरहंद की ईंट से ईंट बजाने को व्याकुल हो उठे। सुबह हुई, दादी ने कुछ यूं कह कर विदा किया (आल्हा यार खां जोगी के शब्दों में)-

जाने से पहले आओ गले से लगा तो लूं।
केसों को कंघी करूं जरा मुंह धुला तो लूं।
प्यारे सिरों पै नन्हीं सी कलगी सजा तो लूं।
मरने से पहले तुम को दूल्हा बना तो लूं।

साहिबजादों ने दादी से विदा ली। दोनों कचहरी में हाजिर हुए। जब सूबेदार वजीर खान के प्रपंच, प्रलोभन और डर से भी साहिबजादे विचलित नहीं हुवे तो उन्हे जिंदा दीवार में चुनवा देने का हुक्म जारी हो गया। काजी ने कहा कि इस्लाम में बच्चों को बाप के अपराध की सजा नहीं दी जा सकती। अंततः नवाब के आतंक आगे काजी ने इजाजत दे दी। लेकिन मलेरकोटला का नवाब 8 और 6 साल के अबोध बालकों को दी जा रही मौत की सजा के खिलाफ डट कर खड़ा हो गया। आह! का नारा मारा और कहा, ऐसा पाप आज तक इतिहास में कहीं नहीं हुआ। इस पाप में शरीक होने वाले सारे खुदा की नजर में गुनहागार हैं। लेकिन उसकी सुनवाई नही हुई। 26 दिसंबर 1704 को दोनों साहिबजादों को दो दीवारों में खड़ा कर जिंदा चिनवा दिया। जब यह शहादत बुर्ज में कैद दादी गुजरी जी के पास पहुंची तो उन्होंने भी अपने प्राण त्याग दिए।

टोडरमल जैन ने नवाब से दाह संस्कार के लिए उस साइज की जमीन पर अशर्फियों खड़ी कर उसकी कीमत चुकाई। कहते हैं संसार की सबसे महंगी जमीन खरीदी गई जहां साहिबजादों और माता गुजरी जी का अंतिम संस्कार हुआ। ठंडे बुर्ज में कैद रहे बच्चों और माता गुजरी जी को अपनी जान पर खेल कर गर्म दूध पिलाने वाले मोतीराम मेहरा और परिवार का अंतिम संस्कार करने वाले टोडरमल जैन का नाम सिख समाज में बड़े आदर-सत्कार से लिया जाता है।

अपने समय के प्रख्यात मुस्लिम कवि और चिंतक जोगी अल्लाह यार खां लिखते हैं-

बस एक हिंद में तीरथ है यात्रा के लिए।
कटाए बाप ने बच्चे जहां खुदा के लिए।
चमक है मेहर की चमकौर तेरे जरों में।

ओंकार सिंहः अध्यक्ष, केबीजीबी संस्था, जयपुर

रोटरी क्लब जयपुर सिटीजन का आरसीपीएल-2 का भव्य आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया। रोटरी क्लब जयपुर सिटीजन का क्रिकेट महाकुम्भ आरसीपीएल-2 रविवार को महावीर स्कूल में सम्पन्न हुआ। क्लब अध्यक्ष राजेश गंगवाल ने बताया की इस महाकुंभ में कुल 12 टीमो के करीब 150 सदस्यों ने हिस्सा लिया, इसमें 8 मेल टीम और 4 फीमेल टीम थी। विशेष बात यह रही की सभी टीमों ने करीब 10 दिनों तक प्रैक्टिस मैच खेले और टूर्नामेंट वाले दिन प्रत्येक टीम ने 3 लीग मैच खेले उसके बाद सेमी फाइनल और फाइनल मैच खेले गये। टूर्नामेंट चेयरमैन प्रमोद जैन ने बताया कि कार्यक्रम का शुभारम्भ सुबह 9 बजे किया गया जिसकी मुख्य अतिथि प्रिंसिपल चीफ कमिश्नर इनकम टैक्स श्रीमती ईरीना गर्ग थी। श्रीमती गर्ग ने अपने उद्बोधन में क्लब की सराहना करते हुए कहा की यह सराहनीय है की क्लब मैनेजमेंट ने महिला सदस्यों को भी बराबर की प्राथमिकता देते हुए आरसीपीअल -2 में खेलने का मौका दिया। उन्होंने अन्य अतिथियों के साथ आकाश में गुब्बारे छोड़ कर शुभारंभ किया। क्लब सचिव कमल बडजात्या ने बताया की मेल टीम फाइनल मैच एस जी लेजेंड्स और रोटेरियन रॉयल चैलेंजर्स के बीच हुआ और एस जी लेजेंड्स मेल टीम में विजेता रहे । फीमेल फाइनल मैच नीना चैम्पियंस और नरेंद्र परफॉर्मर्स के बीच हुआ जिसमे नरेन्द्र परफॉर्मर्स ने जीत कर अपना विजेता टाइटल पर कब्जा बनाए रखा। समारोह के को- चेयरमैन दिनेश बज ने बताया कि सभी मैच के मैन ऑफ द मैच, इसके अलावा बेस्ट फील्डिंग, बेस्ट बॉलर, बेस्ट बैट्समैन, फास्ट हाफ सेंचुरी, विकेट हैट्रिक के भी पुरस्कार दिये गये । समारोह के चीफ कॉर्डिनेटर संदीप जैन ने बताया के समापन समारोह के मुख्य अतिथि मेजर जनरल राय सिंह गोदारा ने सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों का सम्मान किया। अंत में कोषाध्यक्ष संजय अग्रवाल ने सभी का आभार व्यक्त किया।

किताबों से प्यार कर लो, जिंदगी में बहार आ जाएगी

विजय गर्ग

20वीं सदी की महान अंग्रेजी लेखिका वर्जिनिया वुल्फ का कहना था कि 'किताबें आत्मा का दर्पण होती हैं' यह हर युग के लिए प्रासंगिक है। पुस्तकों का मूल्य रत्नों से भी अधिक है क्योंकि रत्न बाहरी होते हैं 20वीं सदी की महान अंग्रेजी लेखिका वर्जिनिया वुल्फ का कहना था कि 'किताबें आत्मा का दर्पण होती हैं' यह हर युग के लिए प्रासंगिक है। पुस्तकों का मूल्य रत्नों से भी अधिक है क्योंकि रत्न बाहरी सौन्दर्य और सौन्दर्य को दशार्ते हैं लेकिन पुस्तकें मनुष्य के आन्तरिक संसार को प्रकाशित करती हैं।आज के समय में जहां कंप्यूटर, लैपटॉप, इंटरनेट आदि ने बच्चों को अनगिनत सुविधाएं प्रदान की हैं, वहीं किताबें वह रत्न हैं जो अंधेरे में भी ज्ञान की रोशनी फैलाती हैं। वे दोस्तों में सबसे शांत और सबसे बुद्धिमान हैं। इनसे अच्छा और ईमानदार दोस्त कोई नहीं हो सकता. गंगाधर तिलक ने एक बार कहा था, 'मैं नरक में भी अच्छी पुस्तकों का स्वागत करूंगा क्योंकि उनमें वह शक्ति है कि वे जहां भी होंगी, स्वर्ग बन जाएंगी।' विद्यार्थी जीवन में भूमिका विद्यार्थी जीवन में पुस्तकेंइस भूमिका से कोई भी अपरिचित नहीं है. जब बच्चा छोटा होता है तो वह रंगीन किताबों की ओर आकर्षित होता है। जब वह किताब खोलता है, तो वह एक नई दुनिया में कदम रखता है। एक ऐसी दुनिया जिसमें ज्ञान का खजाना तो है ही, मनोरंजन के साथ-साथ जिंदगी के सबक यानी इंसानी जिंदगी की परख और सदियों का ज्ञान छिपा है। एक बच्चे के लिए किताबें सबसे महत्वपूर्ण होती हैं। शिक्षा के प्रत्येक चरण में विभिन्न प्रकार की पुस्तकें

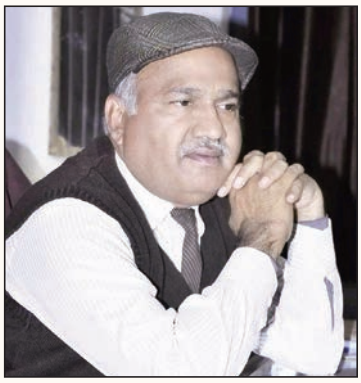

पढ़ना आवश्यक है। किताब बच्चे के खाली दिमाग पर लिखी गई है, जो उसका हैवैयक्तिकता को नई परिभाषा देता है। बौद्धिक विकास में सहायता किताबें पढ़ने से बच्चों का बौद्धिक विकास होता है। किताब वह दोस्त है, जो बचपन से ही बच्चों के मन के अंधेरे को ज्ञान से रोशन कर देती है। यह विभिन्न तथ्यों, खोजों, संस्कृतियों के ज्ञान के साथ बच्चे का बौद्धिक विकास करता है। उनमें नई खोज करने और तुलनात्मक अध्ययन करने की क्षमता विकसित होती है। स्मृति का विकास किताबें पढ़ने से बच्चों की याददाश्त क्षमता भी बढ़ती है। जब बच्चे किताब पढ़ते हैं तो उनके मन में किताब में दी गई कहानी की तस्वीर बन जाती हैवे इसे ग्रहण कर लेते हैं और इस प्रकार पढ़ा हुआ लम्बे समय तक याद रहता है। प्रतिदिन पढ़ने से एकाग्रता में भी सुधार होता है। शारीरिक व्यायाम की तरह, पढ़ना मानसिक व्यायाम का एक रूप है जो बच्चे की याददाश्त में सुधार करता है। शब्दावली विस्तार किताबें पढ़ने से ही शब्दावली का विस्तार होता है। जब कोई बच्चा विभिन्न विषयों पर किताबें पढ़ता है, तो उसे कई ऐसे शब्द दिखाई देते हैं, जो उसके लिए नए होते हैं और वह उनके अर्थ से अनजान होता है। फिर इन शब्दों को शब्दकोश में ढूंढना एक दिलचस्प गतिविधि है, जो मन को उस नए शब्द पर केंद्रित रखती है ऐसा होता है और प्रतिदिन किताबें पढ़ने से बच्चे की शब्दावली का विस्तार होता रहता है। तनाव से मुक्ति किताबें न केवल ज्ञान का बल्कि मनोरंजन का भी साधन हैं। किताबें बच्चों का तनाव कम करती हैं। रोमांचक कहानियों वाली किताबें बच्चों को एक नई दुनिया की यात्रा पर ले जाती हैं। जहां वे काल्पनिक दुनिया का हिस्सा बन जाते हैं और रोजमर्रा की जिंदगी के तनाव को भूल जाते हैं। कल्पना का विकास किताबें न केवल बच्चों को कहानियों या अन्य तथ्यों से परिचित कराती हैं, बल्कि यह उनकी कल्पनाशीलता को भी बढ़ाती हैंहै उनकी कल्पनाशील उड़ान ही उन्हें भविष्य का लेखक, वैज्ञानिक आदि बनाती है। बच्चों की कल्पनाशीलता उन्हें मशहूर हस्तियों की तरह किसी उद्देश्य के लिए समर्पित होने के लिए प्रेरित करती है। शिक्षक और माता-पिता मार्गदर्शक हैं बच्चों के लिए किताबों का महत्व, लेकिन यहां यह जानना भी जरूरी है कि माता-पिता और शिक्षक ही ऐसे मार्गदर्शक होते हैं जो बच्चों को सही किताबें चुनने में मदद कर सकते हैं। जैसा कि हम जानते हैं कि समाज में विभिन्न प्रकार की पुस्तकें होती हैं। इनमें से कुछ किताबें बच्चों की हैंउन्हें सही दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर सकता है। इसलिए परिवार के बड़ों और स्कूल के शिक्षकों की जिम्मेदारी बनती है कि वे बच्चों को अच्छी किताबें पढ़ने के लिए प्रेरित करें और उनके सामने एक उदाहरण बनें। लेखन

क्षमता में वृद्धि जब बच्चे किताब पढ़ने में आनंद महसूस करने लगते हैं तो न केवल उनका पढ़ने के प्रति बल्कि लिखने के प्रति भी प्रेम बढ़ जाता है। किताबें बच्चों को विभिन्न विषयों पर लिखने के लिए प्रेरित करती हैं। अगर आप मशहूर लेखकों की जीवनियां पढ़ेंगे तो आपको पता चलेगा कि हर लेखक बचपन का होता हैउन्हें किताबें पढ़ने का शौक रहा है. आकर्षक दुनिया का हिस्सा बनें किताबें न केवल बच्चों के बौद्धिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास में मदद करती हैं बल्कि उनके चरित्र निर्माण में भी मदद करती हैं। अच्छे विचारों, प्रेरक कहानियों, देश-विदेश की जानकारी से भरपूर किताबें किसी भी देश के बच्चों के उज्ज्वल भविष्य में सहायक होती हैं। आइए इस सोशल मीडिया युग में बच्चों को व्हाट्सएप, फेसबुक, इंस्टाग्राम आदि से दूर रखें और उन्हें किताबों की आकर्षक दुनिया का हिस्सा बनाएं।

-विजय गर्ग
सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य शैक्षिक स्तंभकार
मलोट

महिलाओं ने माता-पिता को वृद्ध आश्रम न छोड़ने की शपथ ली

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया। शहर महिला मंडल महावीर भवन की महिलाओं ने माता-पिता को वृद्ध आश्रम न छोड़ने की शपथ ली। भीलवाड़ा शहर महिला मंडल के तत्वाधान में हरनी महादेव रोड स्थित ओम शांति वृद्ध आश्रम में भजन व भोजन कर कर लिया आनंद।महामंत्री मधु लोढ़ा ने बताया की भीलवाड़ा शहर महिला मंडल ने वृद्ध आश्रम में पहुंच कर बुजुर्ग लोगों के मध्य में उपस्थित होकर भोजन का लाभ प्राप्त कर भजन गाकर सभी का मनोरंजन कराया। संरक्षिका सुशीला छाजेड़ और प्रेम बाई खमेसरा ने बताया कि यहां आकर सभी के सेवा का लाभ प्राप्त किया। सभी बड़े बुजुर्गों की सेवा करना हमारा नैतिक दायित्व होना चाहिए सह मंत्री अरुणा पोखरणा एवं जयश्री सिसोदिया ने बताया कि माता-पिता के चरणों में ही स्वर्ग मिलता है। हम आज शपथ लेते हैं कि हम हमारे बुजुर्ग माता-पिता को कभी वृद्धआश्रम नहीं छोड़ेंगे और उनकी हमेशा सेवा करेंगे । पिंकी कोठारी व अर्पिता खमेसरा ने बताया कि इस शपथ कार्यक्रम में सुशीला खमेसरा सीमा खमेसरा नीता खटवड़ रिंकू पोखरणा ललिताखमेसरा आजाद सुराणा रेखा पीपाड़ा तारा छाजेड़ चंचल छाजेड़ सुशीला खमेसरा संगीता सुराणा लाडदेवी बम सुनीता बागचार मीणा मारू सहित कई बहने उपस्थिति थी। महामंत्री मधु लोढ़ा ने सभी का आभार अभिव्यक्त किया।

जैन सोशल ग्रुप सनशाइन द्वारा जैन समाज में चल रहे प्रचलन को परिवर्तित करने का छोटा सा प्रयास

अमित गोधा. शाबाश इंडिया

ब्यावर। जैन सोशल ग्रुप सनशाइन द्वारा जैन समाज में चल रहे प्रचलन को परिवर्तित करने का छोटा सा प्रयास जैन सोशल ग्रुप सनशाइन के सचिव प्रतीक खटोड़ ने बताया कि समाज के सहभोज में बनने वाले कुछ व्यंजनों के नाम ऐसे होते है जिनसे भविष्य में मांसाहार और शाकाहार में अंतर करना मुश्किल हो जाएगा। जैन सोशल ग्रुप सनशाइन द्वारा जैन समाज में बनने वाले इन व्यंजनों को बनाने से रोक या इनके नाम परिवर्तित किए जाए जिससे आने वाली पीढ़ी शाकाहार और मांसाहार के अंतर को समझ सके और जैन समाज के सिद्धांतो पर आरूढ़ रहे। संस्थापक अध्यक्ष वैभव संकलेचा ने इसे साधारण सभा में प्रस्तुत किया जिसे वहां उपस्थित सभी सदस्यो ने एक स्वर में स्वीकार किया। अध्यक्ष विक्रम सांखला ने सभी सदस्यो का इस कार्य में सहमति देने के लिए सभी सदस्यो का धन्यवाद दिया।

जैन धर्म के 18वें तीर्थकर भगवान अरहनाथ का जन्म एवं तप कल्याणक महोत्सव मनाया हर्षोल्लास से

फागी. शाबाश इंडिया। कस्बे सहित परिक्षेत्र के चकवाडा, चौरू ,नारेडा, मंडावरी ,मेहंदवास ,निमेडा, लसाडिया एवं लदाना सहित कस्बे के आदिनाथ मंदिर, बीचला मंदिर, मुनि सुव्रतनाथ मंदिर, पार्श्वनाथ चैत्यालय , चंद्र प्रभु नसियां,चंद्रपुरी सहित सभी जिनालयों में जैन धर्म के 18वें तीर्थंकर भगवान अरहनाथ का जन्म एवं तप कल्याणक महोत्सव हर्षोल्लास से मनाया गया जैन महासभा के प्रतिनिधि राजाबाबू गोधा ने अवगत कराया कि कार्यक्रम इससे पूर्व श्री का अभिषेक महाशांतिधारा तथा अष्टद्रव्यों से पूजा-अर्चना के बाद सामूहिक रूप से जयकारों के साथ भगवान अरहनाथ का जन्म एवं तप कल्याणक का अर्घ्य चढ़ाकर सुख समृद्धि एवं खुशहाली की कामना की गई।उक्त कार्यक्रम समाज सेवी मोहनलाल झंडा,कपूर चंद जैन मांदी, रामस्वरूप मोदी, केलास कासलीवाल,संतोष बजाज, हरकचंद झंडा, सोभागमल सिंघल,महावीर मोदी,विमल कलवाडा, मुकेश गिंदोडी,महावीर बजाज, राजेंद्र मोदी, पार्षद महेश झंडा,नीरज झंडा, कमलेश झंडा, कमलेश चोधरी,विनोद झंडा, कमल झंडा, जीतू मोदी, तथा राजाबाबू गोधा सहित सभी श्रावक श्राविकाएं मोजूद थे।

प्रमुख समाज सेवी

श्री महावीर जी- श्रीमती मोना जी कासलीवाल

को वैवाहिक वर्षगांठ की हार्दिक शुभकामनाएं एवम बधाई

नमनकर्ता : मोनु -पूजा, गौरव -साक्षी, मयूर -सोनल, तिलक, भरत एवं समस्त कासलीवाल परिवार।

कोरोना अब घातक नहीं पर सावधानी जरुरी

जयपुर. शाबाश इंडिया। इस समय हमारे देश में कोरोना पुनः फैल रहा है। कोरोना के नए वैरियंट जेएन-1के अबतक देश मे 3500 से अधिक मामले आ चुके हैं। यह ओमिक्रान से संबंधित है और तेजी से फैल रहा है,परन्तु सावधानी रखने पर पहले की तरह मारात्मक नहीं है।इसके अन्तर्गत पचास प्रतिशत लोगों में तो कोई खास लक्षण दिखाई नहीं दे रहे पर जिनमें दिखते हैं उनमें नाक और गले में तकलीफ व खांसी व हल्का बुखार हो रहा है। इसलिए मरीज जल्दी ठीक हो रहे हैं। इसमें यह देखने में आया है कि यह वायरस उन लोगों पर ज्यादा असर कर रही है जिन्होंने टीके की डोज नहीं लगवाई या पूरी नहीं लगवाई, या जिन्हें पहले काफी सीवियर हुआ हो,या इस तरह के भी लक्षण रहे हों,या इस समय सर्दी से पूरा बचाव करके नहीं चल रहे हों,या जिनकी ईम्यूनिटी बहुत कम हो। इस समय सर्दी बढ रही है व पारा भी चरम पर पहुंचेगा,ऐसे में पूरी सावधानी जरुरी है। हम भीडभाड से बचें। मास्क का प्रयोग करें। हाथ मिलाने से बचें। साफ-सफाई का पूरा ध्यान रखें। अभी तक कुछ लोगों की मृत्यु भी हो चुकी है,ऐसे में 60 से अधिक उम्र के या जिनको घातक बीमारियां हैं, बच्चे व गर्भवती महिलायें भी पूरी सावधानी बरतें तो बेहतर होगा। अब इस समस्या के लिए अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त वरिष्ठ होम्योपैथ डां.एम.एल जैन 'मणि' ने अपने 50वर्ष से अधिक के अनुभव से इसकी प्रिवेंटिव दवा बनाई है जो इसमें होने वाले गले,नाक,खांसी व बुखार के लक्षणों को नियंत्रित रखेगी। इसका नाम कोजेएन रखा है,और यह 8949032693 पर सम्पर्क कर चिकित्सालय समय पर निःशुल्क प्राप्त की जा सकती है। डॉ. 'मणि' इस प्रकार की प्रिवेंटिव दवा बनाने के कुशल चिकित्सक हैं,और इस कार्य में डॉ. शान्ति जैन 'मणि', डां मनीष मणि व श्रेय जैन का भी पूरा सहयोग रहता है जिन्होंने पूर्व में भी आई फ्लू, मलेरिया, चिकिनगुनिया, स्वाईन फ्लू, डेंगू व कोविड की प्रतिषेधक दवाईयां तैयार की थी व इन्हें अनेकों राष्ट्रीय अवार्ड मिले थे।

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com
weeklyshabaas@gmail.com

जैन सोशयल ग्रुप प्लेटिनमः फैमिली स्पोर्ट्स डे व वार्षिक कैलेण्डर 2024 के विमोचन का आयोजन सम्पन्न

उदयपुर. शाबाश इंडिया

ग्रुप के फैमिली स्पोर्ट्स डे व वार्षिक कैलेण्डर 2024 के विमोचन का आयोजन गत रविवार 24 दिसंबर 2023 को चौधरी स्पोर्ट्स एकेडमी में सम्पन्न हुआ। जैन सोश्यल ग्रुप प्लेटिनम के संस्थापक अध्यक्ष जितेन्द्र हरकावत ने बताया कि कार्यक्रम में मुख्य अतिथि नगर निगम उदयपुर उपमहापौर पारस सिंघवी, क्षेत्रीय पार्षद राकेश जैन इलेक्ट्रिक एसोसिएशन के अध्यक्ष गजेंद्र जैन, युवा व्यवसायी अजय जैन उपस्थित रहे। वार्षिक कैलेण्डर 2024 के सभी विज्ञापन सहयोगी का उपरना द्वारा स्वागत कर कैलेण्डर का विमोचन पधारे हुए अतिथियों व ग्रुप पदाधिकारियों द्वारा किया गया। ग्रुप अध्यक्ष विपिन जैन ने बताया की कार्यक्रम की शुरूआत नवकार महामंत्र व राष्ट्र गान के साथ की गई। कार्यक्रम में क्रिकेट प्रतियोगिता में ग्रुप के पुरुष सदस्यों की चार टीम आकाश, पृथ्वी, अग्नि और वायु एवम महिला सदस्यो की चार टीम नॉर्थ, साउथ, ईस्ट व वेस्ट तथा बच्चो की दो टीम हिल्स व माउंटेन्स टीम ने भाग लिया । साथ ही 5 से 10 वर्ष व 11 से 15 वर्ष कैटेगरी में रेस, महिला सदस्यो के लिए खोखो मैच का आयोजन भी किया गया। क्रिकेट प्रतियोगिता में पुरुष व महिला सदस्यों में 2-2 लीग मैच खेले गए व पुरुष सदस्यों का फाइनल मैच टीम वायु और टीम आकाश के बीच खेला गया जिसमे टीम वायु विजय हुई । महिला सदस्यों का फाइनल मैच टीम साउथ और टीम ईस्ट के बीच खेला गया जिसमें टीम साउथ विजेता रही, वही बच्चो की टीम में हिल्स टीम विजेता रही। सचिव सुमित खाब्या ने बताया की पुरुष सदस्यों के पहले मैच लीग मैच में प्रशम जैन, दूसरे लीग मैच में सौरभ सोनी व फाइनल मैच में हेमंत सिसोदिया मेन ऑफ दी मैच रहे व मेन ऑफ दी सीरीज दिलीप मेहता रहे । वही महिला सदस्यों के पहले लीग मैच में पूनम जैन, दूसरे लीग मैच में व फाइनल मैच में खुश्बू सुराणा वूमेन ऑफ दी मैच व वूमेन ऑफ दी सीरीज खुश्बू सुराणा रही। बच्चों के क्रिकेट में रिदम जैन मेन ऑफ दी मैच रहे साथ ही 5 से 10 वर्ष के बच्चो की रेस में तीर्थ खाब्या व पहल सिंघवी तथा 11 से 15 वर्ष के बच्चो में सक्षम सिंघवी व नीवांशी जैन विनर रहे। क्रिकेट में फाइनल विनर टीम के सभी मेंबर्स को ट्रॉफी व खो-खो टीम के सभी टीम मेंबर्स को मैडल से पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम में कॉमेंट्री कमलेश जैन, पुनीत जैन व तनुजय जैन द्वारा व स्कोरिंग कपिल जैन द्वारा, अंपायरिंग कल्पेश जैन, हेमन्त सिसोदिया, संदीप घरबड़ा, राकेश जैन द्वारा कि गई। कार्यक्रम में ग्रुप संस्थापक अध्यक्ष जितेन्द्र हरकावत, पूर्व अध्यक्ष प्रीतेश जैन, मुकेश चपलोत, निवर्तमान अध्यक्ष आशीष रत्नावत, उपाध्यक्ष तनुजय जैन, सह सचिव लोकेश जैन, कोषाध्यक्ष पंकज जैन पीआरओ ग्रीटिंग्स हेमंत सिसोदिया, कार्यकारिणी सदस्य सहित लगभग 200 सदस्यों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन प्रितेश जैन द्वारा व आभार सुमित खाब्या द्वारा दिया गया ।

देश दुनिया में उल्लास से मनाया मैरी क्रिसमस

उदयपुर. शाबाश इंडिया। झीलों की नगरी में 25 दिसंबर क्रिसमस डे के रूप में भी सेलिब्रेट किया गया। क्रिश्चन समुदाय द्वारा सुबह चर्च में विशेष प्रार्थना के साथ बधाई दी गई। इस खास मौके की पूर्व संध्या पर नगर के सभी गिरिजाघरों को रोशनी से सजाया गया। चर्च और घरों में प्रभु यीशु की झांकियां आकर्षण का केंद्र बनी रहीं। होटल्स और मॉल में क्रिसमस ट्री सजे और सांता क्लॉज ने गिफ्ट बांटे। क्रिसमस डे पर शाबास इंडिया के लिए यह खास छवि उदयपुर की शानू लोढ़ा ने उपलब्ध कराई है। जिसे शानू ने क्लिक करने के बाद आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के प्रयोग द्वारा और खूबसूरत बना दिया।

राकेश शर्मा ' राजदीप '

तीये की बैठक

श्रीमती सुनीता जैन

धर्मपत्नी उत्तम चंद जैन (पाटोदी) धुवां वाले

का आकस्मिक निधन 25 दिसंबर, 2023 को हो गया हैं।
उनके तीये की बैठक 27 दिसंबर को प्रातः 10 बजे
जैन भवन भट्टारक जी की नसियां, नारायण सिंह सर्किल,
जयपुर पर रखी गई है।

-: शोकाकुल :-

उत्तम चंद जैन (पति), प्रज्ञा जैन (पुत्री)

पीहर पक्ष :- सुरेंद्र कुमार (पिता) राजेंद्र कुमार, जम्बूकुमार, पवन मोदी शाहपुरा, भीलवाडा

निवासः बी - 180 मंगल मार्ग, बापू नगर जयपुर | मोबाइल नंबर- 7240157197

जैसवाल जैन परिचय सम्मेलन में उमड़ा जनसैलाब

2500 से अधिक बंधु हुए सम्मिलित, 400 से अधिक बच्चों का मंच पर हुआ परिचय

मनोज नायक. शाबाश इंडिया

सोनागिर। दिगम्बर जैसवाल जैन उपरोचिया समाज के दो दिवसीय परिचय सम्मेलन में चार सैकड़ा से अधिक युवक युवतियों का परिचय कराया गया। अविवाहित प्रतिभाएं प्रस्तुति समूह द्वारा आयोजित अविवाहित युवक युवती परिचय सम्मेलन में युवकों ने बहुतायत संख्या में मंच से अपना परिचय दिया, जबकि युवतियों की संख्या कम रही । कुल मिलाकर लगभग चारसो से अधिक युवक युवतियों का मंच से परिचय कराया गया ।जो बच्चें कार्यक्रम में उपस्थित नहीं हुए उनका परिचय विडियो क्लिप के माध्यम से बड़ी रंगीन स्क्रीन पर दिखाया गया । मंच पर परिचय देने वाले चार युवकों एवम आठ युवतियों को ड्रॉ निकालकर सोने की गिन्नियां प्रदान की गई। आयोजकों द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार उक्त सम्मेलन में सम्पूर्ण भारतवर्ष से लगभग 2500 से अधिक सजातीय बंधु सम्मिलित हुए । आयोजन के परम संरक्षक प्रदीप जैन पीएनसी परिवार आगरा की ओर से सभी के भोजन आदि की व्यवस्था एवम शुभकामना परिवार धौलपुर द्वारा जलपान आदि की व्यवस्था की गई थी ।एप एडमिन रूपेश जैन दिल्ली ने जैसवाल जैन परिणय एप की संपूर्ण जानकारी से सभी को अवगत कराया। इस अवसर पर एक बहु रंगीन अविवाहित युवक युवती परिचय पुस्तिका का विमोचन भी अथितियों द्वारा किया गया ।उक्त पुस्तिका में 2000 से अधिक सजातीय युवक युवतियों का संपूर्ण वायोडाटा प्रकाशित किया गया है । आयोजन समिति के राष्ट्रीय संयोजक अजय जैन शिवरी ने कार्यक्रम में पधारे हुए समस्त अथितियों, क्षेत्रीय संयोजकों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया ।समूह के संरक्षक मनोज जैन कोटा के सहयोग से कार्यक्रम का सीधा प्रसारण पारस चैनल एवम अहिंसा प्रभावना चैनल पर किया गया। आयोजकों द्वारा सभी लोगों की सुविधा का पूरा ध्यान रखा गय । सभी व्यवस्थाओं की लोगो ने काफी प्रशंसा की।

संत निवास पर एक्यूप्रेशर चिकित्सा शिविर का शुभारंभ

विमल जोला. शाबाश इंडिया

निवाई। दिगम्बर जैन महासमिति निवाई संभाग के तत्वावधान में संत निवास नसिंया जैन मंदिर पर एक्यूप्रेशर चिकित्सा शिविर का शुभारंभ किया गया । जिसमे शिविर 25 से 31 दिसंबर तक लगाया जाएगा। महासमिति निवाई संभाग मंत्री विमल जौंला ने बताया कि एक्यूप्रेशर चिकित्सा शिविर 25 दिसंबर सोमवार को संत निवास पर शुभारंभ किया गया । शिविर का उद्घाटन समाजसेवी धर्मचंद चंवरिया दिगम्बर जैन महासमिति निवाई संभाग अध्यक्ष हुकमचंद जैन संरक्षक महावीर प्रसाद पराणा मंत्री विमल जौंला एवं सत्यनारायण जैन ने संत शिरोमणि चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज की तस्वीर के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर शिविर का शुभारंभ किया गया।शिविर में एक्यूप्रेशर सुजोक एवं वाईब्रेसन चिकित्सा द्वारा रोगोपचार कैम्प 21 वीं सदी का प्राकृतिक उपचार 8 दिन तक एक्यूप्रेशर पद्वति द्वारा सभी रोगियों को चिकित्सा दी जाएगी। शिविर के शुभारंभ के अवसर पर थेरेपिस्ट डाक्टर विरेन्द्र जैन डाक्टर एस. के. चौधरी डाक्टर जे .आर. सारण सहित डाक्टर टीम ने उपस्थित रोगियों को एक्यूप्रेशर चिकित्सा पद्धति के बारे में जानकारी दी।इस अवसर

पर शिविर में मोटापा ब्लडप्रेशर मधुमेह पेट के रोग हरस मसा कब्ज गैस सरवाईकल दर्द पुराना सिर दर्द कमर दर्द जोड़ों का दर्द आंख कान नाक और गले की बिमारी और अनेक प्रकार के दर्द बिना दवाई एक्यूप्रेशर और चुम्बक चिकित्सा द्वारा हाथ और पैरों की नसे दबाकर इलाज किया जाएगा। कार्यक्रम संयोजक महावीर प्रसाद पराणा एवं विमल जौंला ने बताया कि दिगम्बर जैन महासमिति के तत्वावधान मे 25 दिसंबर से 31 दिसंबर 2023 रविवार तक सन्त निवास नसिंया जैन मंदिर पर एक्यूप्रेशर पद्वति का मेगा कैम्प लगाया गया जिसमें आमजन इस पद्वति का लाभ ले सकेंगे।